नदी की धार

दीया चौधरी का दूसरा पीरियड खाली था। स्टॉफ रूम से वो पाँच दस मिनट पहले ही निकल कर पाँचवीं 'ए' कक्षा के बरामदे के खम्बे से टिककर खड़ी हो गई व नीचे यूं ही झाँकने लगी। तभी भीतर पढ़ाती श्रेष्ठा गिल की आवाज़ उसके कानों से आ टकराई। 'कृतघन'– जो उपकार न समझे। सुनते ही दिया चौधरी का माथा ठनका। हिन्दी में एम ए यह टीचर क्या पढ़ा रही है? 'कृतघ्न' शब्द का इतना निरादर ! भई माना कि यह अँग्रेजी मीडियम स्कूल है। पर.....पर हिन्दी तो हिन्दी उच्चारण में पढ़ाई जानी चाहिए न! शायद यह पँजाबी उच्चारण था। दीया यू. पी की थी, इसलिए पंजाबी ठीक से नहीं जानती थी। खैर, तभी टन् टन् टन् घ्मटी बज उठी। दीया की विचारधारा टूटी, सामने श्रेष्ठा गिल मुस्कुराते हुए बाहर आ रही थी। दीया ने उसकी ठंडी मुस्कुराहट का जवाब मुस्कुरा कर दिया व कक्षा के भीतर अपना विषय पढ़ाने चली गई।

दीया के दिमाग के किसी कोने में खलबली तो मच ही गई थी। लंच– ब्रेक में आज वो श्रेष्ठा गिल के पास ही बैठी, पर अभी कुछ बोली नहीं। श्रेष्ठा गिल इसी सैशन में आई थी। उम्र कोई तीस के करीब , बहुत ही सादा लिबास पहनती व सुन्दर दिखती थी। न माथे पर बिन्दी, न हाथ में चूड़ी, केवल बाईं कलाई में घड़ी और हल्के या सफेद रंग के सलवार कमीज। पता चला वो विधवा है, उसका छः साल का बेटा दीपक भी यहीं पढ़ रहा है। दीया को उस पर तरस आ गया। वो उसे उसकी भूल जताना चाहती थी, लेकिन किसी के समक्ष उसका निरादर हो, यह भी नहीं चाहती थी। शुक्रवार के पाँचवें पीरियड में स्टॉफ रूम में दोनो फ्री बैठी थीं, वहाँ और कोई नहीं था। दीया ने मौका उचित देखकर उससे पूछा कि वो उस दिन क्या पढ़ा रही थी उस पर श्रेष्ठा के किताब खोलकर दिखाने पर दीया ने 'कृतघ्न शब्द का उच्चारण पूछा। श्रेष्ठा की भूल सुधारते हुए दीया ने बातों ही बातों में उसे सही उच्चारण समझा दिया। श्रेष्ठा मिसेस दीया चौधरी से बहुत प्रभावित हुई। दोनो में दोस्ती हो गई। श्रेष्ठा का बेटा दीपक व दीया की बेटी नेहा एक ही कक्षा में पढ़ते थे। उनमें भी दोस्ती हो गई। दोनो ने एक –दूसरे को घर आने को आमंत्रित किया। अगले रविवार को दीया के पति देव चौधरी घर पर होंगे; उस कारण श्रेष्ठा गिल के घर जाने का कार्यक्रम तय हो गया।

इतवार की शाम को तैयार होकर दीया का परिवार ज्यूं ही घर से बाहर निकलने को हुआ कि घर के बाहर एक कार आकर रूकी। बिन बुलाए मेहमान! कोई और मौका होता ते दीया को अच्छा लगता, लेकिन इस समय उनका आना उसे खल रहा था। वो लोग 'माता वैष्णों' के दर्शनार्थ आए थे, सोचा रास्ते में मिलते जाएं। देव ने कहा कि रास्ते से एक फोन तो कर देते, क्योंकि यदि वे पाँच मिनिट भी देर से आते तो घर पर उन्हें ताला मिलता। भविष्य में कभी ऐसी भूल न करें। दीया व देव ने डटकर उन्हें चाय–पानी करवाया। जाते –जाते उन्होंने साढ़े सात बजा दिए। अब तो साँझ गहरा गई थी। क्या किया जाए.....? दीया ने देव की ओर प्रश्न करती दृष्टि डाली। देव ने दीया के मन को पढ़ लिया। बोला, देर तो बहुत हो गई है; चलो आज चलकर क्षमा ही माँग आते हैं। दीया को मानो मुँह माँगी मुराद मिल गई। वो प्रसन्न हो उठी। दिल के किसी कोने में पति के प्रति असीम आदर व प्रेम भरा विश्वास भर उठा। एक मीठी नज़र का आदान–प्रदान कर वे श्रेष्ठा के घर के लिए निकल पड़े।

वहाँ पहुँच कार बाहर पार्क करके , वे चुपचाप अधखुले मुख्य दरवाजे से भीतर के मुख्य दरवाजे पर पहुँचे। ड्राइंगरूम के बाहर ही वे ठिठककर रूक गए। श्रेष्ठा के साथ कोई पुरूष बैठा

था। व्हिस्की का गिलास उसके हाथ में था। वो बेहूदे ढंग से बात कर रहा था। घड़ी भर के लिए दीया को लगा देव क्या सोच रहे होंगे कि उसकी सहेली अच्छी औरत नहीं है। उसने पति की निगाहों को पढ़ा , वहाँ उसने एक विश्वास पाया। दीया ने दरवाजे पर टिक टिक की व भीतर प्रवेश किया। श्रेष्ठा को तो जैसे साँप सूँघ गया। शायद वो इस भ्रम में थी कि इतनी देर होने से अब दीया चौधरी नहीं आएगी। उसके आने की बात तो शाम की थी। खैर ,वो सकपका कर उठी और आगे बढ़कर उनका स्वागत किया। 'अच्छा मैं चलता हूँ' ,यह कहते हुए वे महोदय हड़बड़ाए से उठे और डोलते हुए बाहर हो लिए। शबने चैन की साँस ली, लगा एक भद्दा सा सीन खत्म हो गया हो।

श्रेष्ठा अपने चेहरे पर बेहद प्रसन्नता के भाव लाते हुए उन दोनो को अपने साफ सुथरे बैडरूम में ले गई। थोड़ी सी औपचारिकता के बाद श्रेष्ठा तो एक खुली किताब की तरह पन्ना दर पन्ना उनके समक्ष खुलने लगी। पहला अध्याय तो उन्ही महोदय से आरम्भ हुआ। ऊपर से हरा दिखाई देने वाला पर्व त अपने भीतर ज्वालामुखी का लावा भरे हुए है—ये कभी कोई नहीं जान पाया। तो फिर इस शांत व सौम्य दिखने वाले चेहरे के भीतर कितना कुछ उमड़ – घुमड़ रहा है, यह तो उसके खुलने के बाद ही दीया को ज्ञात हुआ। इस बीच श्रेष्ठा का नौकर कोल्ड ड्रिंक्स रख गया। देखने में तो वो घर का नहीं, बल्कि किसी ऑफिस में काम करता लग रहा था। बहुत ही साफ सुथरा व तमीज़ वाला। श्रेष्ठा ने बताया कि उसे हिमाचली राजाराम का बहुत सहारा है। उसके घर के व बाहर के काम वही सँभालता है। साल में एक बार ही घर जाता है। उसकी बीवी वहाँ पहाड़ पर उसके माता पिता के पास रहती थी। खैर ,यह चर्चा तो दूसरे अथ्याय में होगी। अभी तो श्रेष्ठा के जीवन का प्रथम अध्याय खुल रहा था।

बी. एस. सी. पास करते ही श्रेष्ठा के लिए रिश्तेदारी से रिश्ते आने लगे थे। विधवा माँ एक आश्रम की संचालिका थी। होशियारपुर (पंजाब)के पास एक गाँव में महेशगिल का ईंटों के भट्टे का काम था। बासमती चावल के खेत भी थे। खूब खाता– पीता परिवार था। वहीं गाँव में बड़ा सा घर भी था। महेश के माता पिता नहीं थे,लेकिन रिश्तेदार बहुत थे। अच्छा सा मुहूर्त देखकर श्रेष्ठा और महेश का विवाह कर दिया गया। श्रेष्ठा बहुत खुश थी पति के साथ। विलायत से महेश के बचपन का दोस्त मदन भी आया था। शादी के बाद वह दस दिन गाँव में ठहरा। हर दिन वो महेश के साथ होता व उसे समझाता कि वो शराब पीना कम कर दे। इसीसे श्रेष्ठा उसको काफी मान देती थी। श्रेष्ठा ने उसी समय एक लिफाफे में से फोटो निकालकर दिखाई। श्रेष्ठा व उसके दूल्हे के पीछे वो मध्य में खड़ा था। उस सजीले नौजवान को देखकर कोई नहीं कह सकता था कि वो दो बटों का बाप होगा। खैर. यह भी बाद की बात है—। श्रेष्ठा के पाँचवां महीना चल रहा था, उन दिनो एक रात कोठी के बरामदे में सारी रात शराब का दौर चलता रहा। भोर की किरण फूटने तक महेश का इतना बुरा हाल हो गया था कि वो उल्टियाँ कर –कर के बेहाल हो चुका था। शहर ले जाया गया, वहाँ लीवर फटने से महेश की मृत्यु हो गई। मात्र तेईस वर्ष की आयु में श्रेष्ठा ने विधवा का वेश धारण कर लिया। उसके चार महीने के पश्चात् दीपक का जन्म हुआ। शुभचिन्तकों व रिश्तेदारों के कहने पर सारा काम इसी इन्दरजीत की देख रेख में छोड़कर श्रेष्ठा अपनी माँ के पास आ गई थी। जो व्यक्ति अभी यहाँ बैठा था; महेश के दूर के रिश्ते का भाई व करीबी दोस्त इन्दरजीत ही था। हम प्याला हम निवाला' —यही हर महीने कमाई की रकम लाता था। जब भी आता , साथ में शराब का पौव्वा भी होता था। एक गिलास अपने लिए व दूसरा महेश के नाम का भरकर चियर्स करके जाम से जाम टकराकर महेश से काल्पनिक बातें करता रहता था। पहले अपना पैग पीता, फिर महेश के हिस्से का पैग भी स्वंय ही पी जाता था। महेश को बहुत याद करता

था। ऐसा करने पर श्रेष्ठा इसे रोकती व घर से बाहर निकल जाने को भी कहती थी। अब यह घर श्रेष्ठा ने शहर में अपना खरीदा है। यहाँ आकर भी अपने दुखड़े रोता है। श्रेष्ठा के पास पैसा तो बहुत था, किन्तु अपने को व्यस्त रखने की खातिर माँ के पास रहकर उसने हिन्दी नें एम. ए. किया व अब स्कूल में नौकरी कर रही थी। अपने घर में उसे डर नहीं लगता था। राजाराम उसका हर तरह से ध्यान रखता था। शराबियों से उसे बहुत चिढ़ थी; किन्तु हर महीने उसे एक बार यह सब कुछ झेलना ही होता था। किसी महीने जब कभी ये दिन को आ जाता तो अतिलज्जित हो भाभी से नाक रगड़कर अपने व्यवहार पर क्षमा माँगताा था। अपने यार महेश की दुहाई देता, जिस पर श्रेष्ठा उसकी मजबूरी पर मुँह सी लेती थी।

इस तरह , प्रथम अध्याय की चर्चा समाप्त हो गई। दीया व देव फिर कभी आने को कह ,घर लौट आए थे। दोनो का मन भारी हो उठा था उसकी कथा सुनकर। स्कूल उसी तरह से चल रहा था कि एक दिन श्रेष्ठा ने दीया को अपने घर आकर दिन बिताने को बुलाया। दोनो की दोस्ती प्रगाढ़ हो गई थी। श्रेष्ठा को दीया में इतनी आत्मीयता, अपनत्व मिलता था कि वो दीया का सान्निध्य पाना चाहती थी। देव ने आने वाले इतवार को कहीं बाहर जाना था; सो दीया भी नेहा को लेकर श्रेष्ठा के घर चली गई। दीपक के कमरे में श्रेष्ठा ने अति उत्साहित होकर ढेरों खिलौने नेहा व दीपक को खेलने को निकाल दिए। राजाराम को पकौड़े व चाय बनाने को कहकर दोनो आराम से पलंग पर लेट कर गप्पें मारने लगीं इधर उधर की। पकौड़े खाकर दीया ने राजाराम की तारीफ की। बच्चों के लिए मैगी नूडल्स व अपने लिए लंच में मटर – गोभी का पुलाव बनाने को कहकर श्रेष्ठा ने भीतर से दरवाजा बंद कर लिया। दीया को यह सब नॉर्मल लगा, सो इस ओर ध्यान नहीं दिया। बातों ही बातों में दीया ने प्यार से श्रेष्ठा से पूछा कि अभी तो वह केवल तीस वर्ष की भी नहीं हुई है ,शादी क्यों नहीं कर लेती दोबारा ?ऐोष्ठा तपाक से बोली, "सब कुछ तो है दीदी मेरे पास ; क्या करूंगी फिर शादी करके?" दीया ने समझाया कि आदमी का सहारा बहुत बड़ी बात है। अभी तो जिदंगी में पता नहीं कैसे – कैसे मुकाम आएंगे; जब उसे सच्चा साथी चाहिए होगा। पेट की आग तो बुझ जाती है ,पर तन की आग इस उम्र में बहुत तंग करती है। उसे भी तो बुझाना पड़ता है। कब तक ऐसे ही जीया जा सकता है?इस पर श्रेष्ठा शरारत से टेढ़ी मुस्कुराहट होंठों पर लाकर बोली, 'दीदी, ईज़ी अपरोच! अर्थात् करीबी पहुँच या आसान पहुँच। ढेरों बखेड़े खड़े करो शादी से; इससे अच्छा है कि जहाँ काम हो सके— कर लिए जाए समाज से बचकर। "श्रेष्ठा का इतना खुला जवाब सुनकर दीया का सर चक्कर खाने लगा। दीया बोली '
,तेरी बात मेरे पल्ले नहीं पड़ रही, खुलासा करके बता न!'

श्रेष्ठा मस्त से मूड में बोली ,दीदी! आपने सुना होगा कि फलां औरत डिलीवरी के लिए अस्पताल गई ,तो पीछे से साली – जीजा की मौज लग गई। जो बहन की मदद के लिए रहने आई हुई थी....ईज़ी अपरोच!दो बच्चों वाली औरत का पड़ौसी के साथ संबंध या फिर जवान बेटी का पड़ौस के लड़के से संबंध। दीवार फाँदकर सारी दोपहर अकेले में मौज करती पड़ोसन। है न ईज़ी अपरोच! जवान लड़कियाँ कज़न्स के साथ मस्ती करती हैं। ये कज़न्स भी न जाने क्या बला हैं?क्या–क्या गुल नहीं खिलाए जाते इन कज़न्स के साथ। क्लियर है....ईज़ी अपरोच। ढेरों ऐसे उदाहरण हैं। केवल समाज का डर ही इंसान को बाँधे रखता है। नहीं तो.....'

श्रेष्ठा की इतनी बेबाक व खुली विचारधारा जानकर दीया का मुँह खुला का खुला रह गया। वह मन ही मन सोचने पर मजबूर हो गई कि जीवन की यह सच्चाई कडुवी तो है पर ठीक भी

है।यही सब कुछ तो घट रहा है हमारे इर्द—गिर्द। दीदी को गुम देखकर श्रेष्ठा फिर बोली, 'दीदी मैं भी इसी में विश्वास करती हूँ– अब समझ भी जाओ न !' उसने गहरी अर्थ भरी मुस्कुराहट के साथ दीया की ओर देखा।उधर दीया का ध्यान सब ओर से हटकर केवल राजाराम पर केन्द्रित हो रहा था।लेकिन अपने संस्कारों से बँधी दीया उसका नाम होंठों पर लाने का साहस नहीं जुटा पाई।भरी –पूरी जवान देह ,गेहुआ रंग ,साफ –सुथरे कपड़े, चेहरे पर मुस्कुराहट एवम् आत्म विश्वास था उसके।साथ वाला बैडरूम दीपक का व बाहर वाला अपने जैसा बैडरूम राजाराम का —सब कुछ क्रिस्टल क्लियर था।

दूसरे अध्याय के समाप्त होते ही दीया सोच में डूब गई कि देखें तीसरा अध्याय कौन से तथ्य उघेड़ कर सामने लाता है।इस चर्चा के पश्चात् तो दीया का मन वहाँ उखड़ा – उखड़ा ही रहा।अनमने मन से वो दोनो फिर इधर – उधर की , स्कूल की व फिल्मों की बातें करती रहीं।साँझ ढलने से पूर्व ही चाय का कप पीकर दीया भारी बोझ लिए घर लौटी।यह कड़ुवा सच उससे हज़म नहीं हो पा रहा था।कुछ ही दिनो में देव चौधरी के ट्रांसफर के ऑर्डर्स आ गए।दीया को शहर छोड़ना था सो नौकरी भी छोड़ी।अधूरे अध्याय को पूरा करने का मौका ही नहीं मिला उसको।क्या मालूम था कि एक लम्बे अंतराल के पश्चात् यह होनी भी घटेगी।

तकरीबन आठ –नौ वर्षों के पश्चात् देव चौधरी प्रमोशन पर पुन: उसी शहर में आ गए।माल रोड पर अच्छी भीड़ थी तभी किसी ने पीछे से दीया का कंधा पकड़ा। दीया ने ज्यूंही पीछे नज़र घुमाई ;श्रेष्ठा! दीया ने हैरान होकर उसे अपने से लिपटा लिया।गिला करने के लहज़े से श्रेष्ठा बोली 'ओह दीदी आपको कितना मिस्स किया।कहाँ गुम हो गए थे आप लोग? पता भी नहीं दिया।'फिर जबरन ही पकड़कर दीया को अपने उसी घर में ले गई , जो माल रोड के पास ही था।दीया को श्रेष्ठा में बहुत बदलाव दिखाई दे रहा था।वह सुन्दर तो थी ही ,अब चेहरे पर निखार व प्रसन्नचित्त दिखाई दे रही थी।घर में एक छोटा सा बच्चा राजाराम की गोद में खेल रहा था।दीया की प्रश्नसूचक दृष्टि का श्रेष्ठा ने झूमकर समाधान किया—'दीदी ,यह मेरा बेटा है।मेरा पुनर्विवाह हो गया है।अब मैं लंदन में रहती हूँ।बेहद –बेहद खुश हूँ। (शरारत भरी मुस्कान के साथ)आओ न अब अन्तिम अध्याय भी आपको सुना दूँ।'दीया ने उसे प्यार करते हुए बधाई दी, व बेटे को भी प्यार किया।

श्रेष्ठा ने बताया कि उसके पति का दोस्त मदन जो उनकी शादी में विलायत से आया था;अपनी पत्नि की मृत्यु कैंसर से हो जाने के कारण घर में अकेला हो गया था।उसके दोनो बेटे पाश्चात्य सभ्यता से ग्रसित होने के कारण अठारह वर्ष की उम्र से घर में नहीं रहते थे।मदन (उसने तीनो की वही पुरानी फोटो फिर से दीया को दिखाई)एकाकीपन से ऊबकर फिर से विवाह करने के इरादे से भारत आए थे।घर पहुँचने पर महेश के बारे में जानने के बाद इंदरजीत से उसका पता लेकर वे उससे मिलने आए।आते ही उन्होंने विभिन्न अख़बारों में अपने लिए रिश्ते के इश्तहार दे दिए थे।मदन शहर में उसके घर ही टिक गए थे।शादी के लिए सुझाव वहीं आने लगे।विलायत के नाम पर कोई अपनी विधवा भाभी , विधवा बहन, तलाकशुदा रिश्तेदार ,यहाँ तक कि अपनी विधवा माँ को लेकर लड़कियाँ आतीं कि अब उनको कौन देखेगा;हम तो अपने घरों में हैं।किसी का पति विदेश गया तो फिर लौटा ही नहीं —ऐसे कई रिश्ते हर दिन ही आते थे।लेकिन मदन के मन को कोई नहीं भा रही थी।श्रेष्ठा और मदन चिट्ठियाँ खोलकर बैठ जाते थे और खूब चर्चा होती थी।मदन का दीपक के साथ बहुत लगाव हो गया था।उसे घुमाने ले जाते व खाना खिलाने भी ले जाते थे।उसके स्कूल के बारे में भी पूछते व खेलों में भी अभिरूचि दिखाते थे।अचानक एक दिन मदन ने श्रेष्ठा से सीधे कहा , 'क्यूं न श्रेष्ठा ! मैं तुमसे

विवाह कर लूँ?'अचानक इतने स्पष्ट शब्दों को सुनकर श्रेष्ठा पहले तो सकपका गई।फिर उसने कहा कि वो माँ व दीपक से पूछकर जवाब देगी।उसने गहराई से सोचा; तो पाया कि मदन के आने से घर में रौनक आ गई थी।माँ तो इसी बात से प्रसन्न हो गई कि उसकी बेटी ने इस विषय में आख़िर सोचा तो।माँ ने झट हामी भर दी।दीपक को तो मदन में अपने पापा की कमी पूरी होती लगती थी । यह सुनकर वह भी प्रसन्नता से झूम उठा। कुछ ही दिनो में एक होटल में करीबी दोस्तों व नज़दीकी रिश्तेदारों के समक्ष श्रेष्ठा व मदन का पुनर्विवाह हो गया।विलायत से मदन के दोनो बेटे भी पापा की शादी में सम्मिलित होने आ गए थे।फोटोग्राफी वही कर रहे थे।उन्हें नई माँ व छोटा भाई पसंद आए थे।अब दो वर्ष का **कर्ण** लेकर वह भारत आई थी सबसे मिलाने।श्रेष्ठा ने बताया कि उस मौके पर दीया व देव को उसने बहुत याद किया था।

सो ,श्रेष्ठा का अंतिम अध्याय उसके जीवन में भरपूर ख़ुशियाँ बटोरकर लाया था।दीपक आज कल लंदन में ग्रेजूएशन कर रहा था।दीया को मस्ती सूझी।बोली, 'क्या कभी ऐसा भी हुआ कि तुम्हे मदन से कहना पड़ा हो कि तुम्हारे बेटे और मेरा बेटा मिलकर हमारे बेटे को तंग कर रहे हैं।" इस बात पर श्रेष्ठा खिलखिलाकर हँसी।

वापसी में दीया सोच रही थी कि **नदी की धार** पवित्र और अपवित्र पड़ावों से गुजरती हुई आख़िरकार अपने गंतव्य सागर में समा ही गई।

वीणा विज 'उदित'